तृतीय अध्याय

शोध प्रविधि

अध्याय तृतीय

अनुसधान की प्रक्रिया

3.1 न्यादर्श का चुनाव –

प्रस्तुत लघु शोध हेतु प्रदत्तों का संकलन छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले में किया गया है। यहाँ के विकास खण्डों के ग्रामीण और शहरी विद्यालयों से कक्षा आठवीं के बालक-बालिकाओं का चयन किया गया, जो राज्यशासित शासकीय विद्यालयों में पढ़ते है। प्रदत्तों को यादृच्छिक न्यादर्श के आधार पर चुना गया। क्योंकि इससे पक्षपात से मुक्ति मिलती है। व्यक्तिगत पक्षपात के लिए इस विधि में कोई स्थान नहीं रह जाता। यह समस्टि का पूर्ण रूप से प्रतिनिधित्व करता है, समय व धन के दृष्टिकोण से यह विधि कम खर्चीली है। यह विधि वैज्ञानिक तथा सरल है, लेकिन प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श का चयन सुविधानुसार सोद्देश्य व सादृच्छिक विधि से किया गया है।

विद्यालयों का चयन करते समय विशेष रूप से निम्नांकित बिन्दुओं को ध्यान में रखा गया है।

1. प्रधान पाठक की अनुमति तथा सहयोग।
2. स्कूल का स्तर (माध्यमिक विद्यालय)।
3. शिक्षकों व विद्यार्थियों का सहयोग।
4. प्रशिक्षित विषय शिक्षक।

उपयुक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध हेतु विद्यालयों के कक्षा (आठवीं) को चुना जिसमें से 50 प्रतिशत विद्यालय शहरी व 50 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र के थे। शोध हेतु संपूर्ण कक्षा से 25-25 विद्यार्थियों को चुना। अतः यादृच्छिक न्यादर्श का प्रयोग किया

गया। चयन की गई शालाओं में समान सामाजिक, आर्थिक स्तर के बालक–बालिकाएं अध्ययनरत् हैं। अतः इन शालाओं का चयन किया गया है। इस प्रकार 200 विद्यार्थियों का चयन शोधकार्य हेतु किया गया है।

शोधकर्ता ने अपना परिचय व्यक्तिगत रूप से विद्यालय जाकर व अपने उद्देश्यों का दिया व सभी से सहयोग का अनुरोध किया।

सारणी क्रमांक 3.1 जिला व शालाओं की संख्या –

क्रमांक	शैक्षिक जिला	शालाएं	शालाओं के प्रकार
1.	सरगुजा	8	4 शहरी 4 ग्रामीण

सरणी क्रमांक 3.2 क्षेत्रानुसार शालाओं व विद्यार्थियों की संख्या

क्र.	क्षेत्र	विद्यालय का नाम	छात्र	छात्राएं	योग
1.	नगरीय	शासकीय बहु उद्देशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अंबिकापुर	25		25
2.	नगरीय	शासकीय बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पुलिस लाइन अंबिकापुर	25		25
3.	नगरीय	शासकीय बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अंबिकापुर		25	25
4.	नगरीय	शासकीय बालिका पूर्व उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मणिपुर अंबिकापुर		25	25

5.	ग्रामीण	शासकीय बालिका पूर्व माध्यमिक शाला उदयपुर		25	25
6.	ग्रामीण	शासकीय बालक पूर्व माध्यमिक शाला उदयपुर	25		25
7.	ग्रामीण	शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय खमहरिया उदयपुर	10	13	23
8.	ग्रामीण	शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला जजगा उदयपुर	15	12	27
			100	100	200

3.2 शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

सामाजिक अध्ययन रूचि मापनी – किसी भी शोध कार्य में प्रयुक्त उपकरणों का चयन बहुत महत्वपूर्ण जगह रखता है। अनुसंधान के लिए समस्या के निश्चय एवं परिकल्पना निर्माण के पश्चात् अनुसंधानकर्ता के समक्ष यह समस्या आती है कि वह अपनी परिकल्पना के परीक्षण के लिए आंकड़ों का संग्रह किस विधि से करें तथा किन उपकरणों द्वारा करें? इस अवस्था में यह वर्तमान उपलब्ध उपकरणों का विश्लेषण करनें के पश्चात् शोधार्थी द्वारा सावधानीपूर्वक कथित शोध प्रबंध से संबंधित रूचि मापनी का निर्माण किया।

उपकरण निर्माण प्रक्रिया –

उपकरण का निर्माण अन्य विषयों के रूचि मापनी का अध्ययन कर किया गया है, तत्पश्चात् प्राध्यापकों को दिखाया गया है। इसमें यथोचित संशोधन कर 10 विषय विशेषज्ञों से जाँच कराई गई। अंत में विषय

शिक्षकों को दिखाया गया कि मापनी विद्यार्थियों के अनुकूल है या नहीं। अंत में इसकी 50 प्रतियाँ बनाकर प्रायोगिक विद्यालय भोपाल के कक्षा–8 में सभी विद्यार्थियों को वितरित किया गया। निर्धारित पश्चात् विद्यार्थियों से मापनी ले ली गई। जाँच कर जो कथन अधिकतर विद्यार्थियों ने छोड़ दिये थे उन कथनों को मापनी से हटा दिया गया या विद्यार्थियों के अनुकूल बनाकर मापनी में शामिल किया गया। इस तरह मापनी में कुल 32 कथन रखे गये।

उपकरण को चयनित क्षेत्र छत्तसीगढ़ राज्य के सरगुजा जिले के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में 4 से 15 फरवरी 2008 के मध्य प्रायोजित किया गया। साथ ही विद्यालयों से विद्यार्थियों की विगत वर्ष (कक्षा–7) की वार्षिक परीक्षा परिणाम का विवरण लिया गया। अंत में शैक्षिक उपलब्धि व विषयिक रूचि के परीक्षण के 'टी' मूल्य व सहसंबंध की गणना की गई। प्राप्त परिणामों से निम्नलिखित निष्कर्ष सामने आये:–

1. छात्र व छात्राओं की सामाजिक अध्ययन में रूचि में कोई विशेष अंतर नहीं है।
2. छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में जो अंतर है वह छात्राओं के पक्ष में जाता है।
3. ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक अध्ययन की उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
4. ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक अध्ययन की रूचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5. सामाजिक अध्ययन में विद्यार्थियों की रूचि व शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक संबंध नहीं है।

शैक्षिक उपलब्धि :– इस अध्ययन में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का प्रयोग किया गया है ताकि इससे छात्रों की सामाजिक अध्ययन में रूचि व उपलब्धि का संबंध ज्ञात किया जा सके। जिसके लिए विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि कक्षा–सात की वार्षिक परीक्षा में सामाजिक अध्ययन विषय में विद्यार्थियों की उपलब्धि का विवरण लिया गया है।

3.3 निर्देश :–

विद्यार्थियों को रूचि मापनी वितरित करने के बाद निम्न निर्देश दिए गए:–

1. यह सामाजिक अध्ययन रूचि मापनी आपके पाठ्यक्रम से संबंधित नहीं है।
2. सर्वप्रथम आप सामने पृष्ठ पर दी औपचारिकताओं (नाम, कक्षा, उम्र आदि) को पूरा कर लें।
3. यह सामाजिक अध्ययन में केवल आपकी रूचि से संबंधित है।
4. इस मापनी में कुल 32 कथन है जिसमें आपको अपनी राय देनी है।
5. प्रत्येक वाक्य के आगे सहमत, असहमत व तटस्थत तीन विकल्प दिए गए है।
6. तीनों में से सिर्फ एक पर ही आपको (✓) सही का निशान लगाना है।
7. सभी वाक्य एक दूसरे से अलग है।
8. सभी वाक्य अनिवार्य है, किसी भी वाक्य को न छोड़े ।

9. आपका कोई भी उत्तर गलत नहीं होगा।

10. यह आवश्यक नहीं कि आप इसमें उच्च अंक प्राप्ती हेतु दें जो आपको अच्छा व सही लगता है उसी को चिन्हित करें।

11. आपकी यह जानकारी पूर्णतः गोपनीय रखी जायेगी।

3.4 प्रयुक्त सांख्यिकी :–

शोध में 'टी' मूल्य व सहसंबंध का प्रयोग कर तुलना की गई है जिससे ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों एवं छात्र व छात्राओं में अंतर देखा गया हैं इसमें शोध में निम्न सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है:–

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी परीक्षण व
4. सहसंबंध